ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 42-46

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्रीमति प्रकृति चतुर्वेदी*
शोधार्थी
आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
Email: prakriti.chaturvedi22@gmail.com

डॉ. सविता शर्मा**
शोध निर्देशिका, शिक्षा संकाय,
आईसेक्ट विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

सांराश :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 50 बच्चों को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 50 कामकाजी महिलाओं के बच्चों में से 25 विद्यार्थी बालक तथा 25 बालिकाऐं हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में कुंठा के मापन के लिए स्वनिर्मित कुंठा मापनी एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कक्षा का परिक्षाफल का उपयोग किया गया है, प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन टी परीक्षण एवं सहसम्बन्ध सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि कुंठा एक ऐसा मनोवैज्ञानिक कारक है जिसका नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक स्तर पर पड़ता है। कुंठा के प्रभाव से बच्चों की सोचने समझने की शक्ति खत्म हो जाती है। जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर गिर जाता है

मुख्य विन्दु– कुंठा, शैक्षणिक उपलब्धि, कामकाजी।

प्रस्तावना :

सभी व्यक्तियों में सामान्यतया स्वभाववश आगे बढ़ने और कुछ न कुछ पाने की तमन्ना रहती है। बहुत सी महत्वाकांक्षाओं से वे घिरे रहते हैं। अपनी इच्छाओं और चाहतों को पूरा करने के लिए वे पूरी तरह संघर्ष भी करते हैं। परन्तु अच्छी से अच्छी योजना बनाकर कार्यपथ पर पूरे जोर–शोर से आगे बढ़ने पर कभी–कभी जैसे सोचा जाता है वैसी संतोषजनक उपलब्धि उन्हें नहीं

मिल पाती। कभी ऐसी भी स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है कि जब उन्हें अपनी प्रगति की राह में अंधेरा ही अंधेरा नजर आता है और आशा की कोई किरण नजर नहीं आती, ऊपर से अपने प्रयत्नों में लगातार मिलने वाली विफलता उन्हें उस स्थिति या हालात में लाकर खड़ा कर देती है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में नैराश्य, भग्नाशा या कुंठा की स्थिति से संबोधित किया जाता है।

पूर्व शोध कार्यः

गुप्ता, मधु एवं रानी, सुरेखा (2015) ने "माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का अध्ययन" किया गया। इन्होंने न्यादर्श के रूप में रोहतक भाहर से प्राईवेट स्कूल के 200 छात्रों को लिया। यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी का प्रयोग किया गया। के.एस. मिश्रा द्वारा रचित घर-वातावरणीय परिसूची का प्रयोग करके विद्यार्थियों के घर के वातावरण को जाना गया। घर-वातावरण के विभिन्न आयामों जैसे- नियंत्रण, संरक्षण, अनुकूलता, दंड, सामाजिक पृथकता, अस्वीकृति, स्वीकृति तथा विशेषाधिकार प्राप्त कर माध्यमिक स्कूल के छात्रों पर प्रभाव देखना शोध का मुख्य उद्देश्य था। निष्कर्ष में पाया गया कि घर-वातावरण के तीन आयाम जैसे- नियंत्रण, ईनाम तथा स्वीकृति का छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा बाकी सात आयाम, जैसे- संरक्षण, सामाजिक पृथकता, अस्वीकृति, दंड आदि का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चारुमति एवं वासुकी (2004) ''किशोरों की उपलब्धि प्रेरणा, भग्नाशा, मानसिक स्वास्थ एवं आत्मद्वन्द का सहोदरों से सबंध'' का अध्ययन किया जिसके लिए बालक विद्यालय से 30 किशोर, कन्या विद्यालय से 30 किशोरियों एवं 60 बालक एवं बालिकाएं को एड विद्यालय से चुने गए, जिनके एक या अधिक भाई बहन थे। नीरा कटवाय सिबलिंग रिलेशनशिप प्रश्नावली, मोहन (1948) द्वारा निर्मित उपलब्धि प्रेरणा, चौहान एवं तिवारी द्वारा निर्मित भग्नाशा मापा, आत्मद्वन्द प्रश्नावली का उपयोग उपकरण के रूप में किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि किशोर जिनमें अधिक प्रतिस्पर्धा की भावना थी, उनमें निम्न मानसिक स्वास्थ्य, उच्च भग्नाशा एवं निम्न उपलब्धि प्रेरणा स्तर पाया गया।

उद्देश्यः

- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधिः

अध्ययन की परिकल्पनाएँः

- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

शोध विधिः

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 50 बच्चों को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 50 कामकाजी महिलाओं के बच्चों में से 25 विद्यार्थी बालक तथा 25 बालिकाऐं हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में कुंठा के मापन के लिए स्वनिर्मित कुंठा मापनी एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कक्षा का परिक्षाफल का उपयोग किया गया है, प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन टी परीक्षण एवं सहसम्बन्ध सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषणः

परिकल्पना क्रमांक. : 1.

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 1.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
कामकाजी महिलाओं के बच्चें	25	56.05	10.43	2.5	3.8	सार्थक अन्तर है
गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चें	25	65.66	7.04			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का मध्यमान 56.05 है तथा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का मध्यमान 65.66 है। कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का मानक विचलन 10.43 है तथा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा का मानक विचलन 7.04 है।

अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 3.8 है जो df 48 पर 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.01 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के

मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की कुंठा में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना क्रमांक. : 2.

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 2.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
कामकाजी महिलाओं के बच्चें	25	81.30	9.39	3.2	2.98	सार्थक अन्तर है
गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चें	25	71.72	13.26			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मध्यमान 81.30 है तथा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मध्यमान 71.72 है। कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मानक विचलन 9.39 है तथा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मानक विचलन 13.26 है।

अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 2.98 है जो df 48 पर 0. 05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.01 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना क्रमांक : 3.

कामकाजी महिलाओं के बच्चों के कुंठा एवं शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी क्रमांक : 3.

चर	संख्या	मध्यमान	सारणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0.05 स्तर
कुंठा	50	56.05	.273	−.401	सार्थक
शैक्षणिक उपलब्धि		83.19			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों के कुंठा का मध्यमान 56.05 है। तथा कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मध्यमान 83.19 है। कामकाजी महिलाओं के बच्चों के कुंठा एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –.401 है। जबकि df 48 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .273 है।

इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .273<–.401 । अतः सहसम्बन्ध सार्थक है। अतः हम कह सकते हैं कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों के कुंठा एवं शैक्षणिक उपलब्धि में ऋणात्मक सार्थक सहसम्बन्ध है।

परिणामः

कामकाजी महिलाओं के बच्चों का कुंठा का स्तर, गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की तुलना में कम होता है। इसका यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कामकाजी महिलाएं व्यस्त रहने के बावजूद भी अपने बच्चों के साथ वक्त बिताती हैं। उनकी हर जरूरत को पुरा करती है एवं कामकाजी होने के कारण वह आधुनिक तकनीकी एवं आधुनिक शिक्षा से भी पूर्णरूप से जागरूक रहती हैं। वह अपने बच्चों के लिए ही एक अच्छी मार्गदर्शक एवं अच्छी शिक्षिका भी होती है वह अपने बच्चों को हर परिस्थिति से लड़कर जीतने लायक बनाती हैं वह उन्हें आजादी भी देती हैं एवं उनके व्यवहार, कार्यों एवं शिक्षा पर पूरा ध्यान भी रखती हैं। इसलिए कामकाजी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि अच्छी होती है कुंठा एक ऐसा मनोवैज्ञानिक कारक है जिसका नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक स्तर पर पड़ता है। कुंठा के प्रभाव से बच्चों की सोचने समझने की शक्ति खत्म हो जाती है। जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर गिर जाता है

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. **एस. के. गुप्ता (2008).** शैक्षिक मनोविज्ञान, प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली।
2. **चारुमति एवं वासुकी (2004).** ‘‘किशोरों की उपलब्धि प्रेरणा, भग्नाशा, मानसिक स्वास्थ एवं आत्मद्वन्द का सहोदरों से संबंध, एशियन जनरल ऑफ सायॅकोलाजी एण्ड एजुकेशन।
3. **राजपूत जे. एस. (1988–1992).** फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, एन. सी. ई. आर. टी.नई दिल्ली, वॉल्युम– 2।
4. **राजपूत जे.एस. (1993–2000).** सिक्सथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, एन. सी. ई. आर. टी.,नई दिल्ली, वॉल्युम– 1।
5. **सिंह रामपाल एवं ओ. पी. शर्मा (2002).** शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।